विचार बिन्दु

उधार वह मेहमान है जो एक बार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। –प्रेमचंद

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये वनानुभव

चीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक पुनर्वसु आत्रेय को चिकित्सा व स्वास्थ्य-रक्षण के एक ऐसे सिद्धांत का जनक माना जाता है जिसे आज वनानुभव और प्रकृति-अनुभव (फ़ॉरेस्ट -एक्सपीरियंस, नेचर-एक्सपीरियंस) आदि नामों से जाना जाता है। स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार में प्राकृतिक स्थलों की भूमिका का आयुर्वेद में कम से कम 1000 साल ईसा पूर्व से वर्णन प्राप्त होता है। हाल ही में हुई शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध करती है कि प्रकृति का सानिध्य हमारे संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और बायोफिज़ियोलॉजिकल स्वास्थ्य में सुधार करता है। परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि वर्ष 2022 तक की शोध अब यह निर्विवाद सिद्ध कर चुकी है कि वनानुभव से ह्यूमन नेचुरल किलर सेल्स की क्रियात्मकता बढ़ने और इन्फ्लेमेशन कम होने सहित अनेक रास्तों के माध्यम से इम्म्यूनिटी बढ़ती है।

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया:–भगवन! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है।

आत्रेय का उत्तर था:–अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुंचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियाँ भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरुप व मज़बूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बूढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चय वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18): सममांसप्रमाणस्तु समसंहननो नरः। दृढेन्द्रियो विकाराणां न बलेनाभिभूयते।। क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः।।

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्म्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-कॉम्प्रोमाइज्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेतरक्त कौशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है।

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार इम्यूनिटी मूलतः दो प्रकार से समझी जा सकती है:– इनेट (जन्मजात) और एडाप्टिव (अनुकूलनीय)। इनेट-इम्यूनिटी प्रतिरक्षा की पहली पंक्ति है जो पैथोजेन को मारने वाली कोशिकाओं जैसे- न्यूट्रोफिल और मैक्रोफेज द्वारा संपादित की जाती है। किसी विषाणु का संक्रमण होने पर ये किलर-सेल्स तेज गति से सबसे पहले अपना काम करती हैं। एडाप्टिव- इम्यूनिटी की क्रियात्मकता तुलनात्मक रूप से धीमी होती है। इस तंत्र में टी-कोशिकाओं, बी-कोशिकाओं और एंटीबॉडी जैसी व्यवस्था है जो विशिष्ट रोगजनकों पर प्रतिक्रिया देता है। यह तंत्र इम्यून-मेमोरी के लिये भी उत्तरदायी है जो मानव में पहले हुई कुछ बीमारियों को पहचानता है और दुबारा नहीं होने देता। मेमोरी बी-सेल नामक कोशिकायें पैथोजेन को पहचानती हैं, और दुबारा संक्रमण होने पर त्वरित-प्रतिक्रिया करते हुये संक्रमण को निष्फल करने का काम करती हैं। हालाँकि नवीन शोध यह बताती है नेचुरल-किलर कोशिकायें भी एडाप्टिव-इम्यूनिटी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन कर सकती हैं। जो भी हो, गड़बड़ तब होती है जब कुछ वायरस या माइक्रोब्स अपने पूर्व रूप से म्यूटेट या उत्परिवर्तित होकर इम्यून-मेमोरी (प्रतिरक्षा स्मृति) को गच्चा दे देते हैं।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्वहै। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी के बल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.36): त्रिविधं बलमिति- सहजं, कालजं, युक्तिकृतं च। सहजं यच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजं वयःकृतं च, युक्तिकृतं पुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजस्तदेव बलमित्युच्यते स्वशास्त्रसिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117): प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवौजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते।। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदाहरण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सात्म्य, सत्त्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय हैं। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मज़बूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मज़बूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लियेसात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें आहार या खानपान, विहार या जीवनशैली, स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, सद्वृत्त या व्यक्तिगत सदाचरण, पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः औषधि या चिकित्सा शामिल हैं। परन्तु वनानुभव इन सबसे ऊपर है। एक साथ वनवास काटने की बात नहीं है बल्कि प्रतिदिन थोड़ा वनानुभव अवश्य लीजिये। प्रति सप्ताह कम से कम 168 मिनट वनों, उपवनों और हरियाली में बिताइये। इससे इम्म्यूनिटी बढ़ने के साथ प्रसन्नता, आत्म-सम्मान, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में धनात्मक सुधार होगा। यह शास्त्र-सिद्ध, शोध-सिद्ध और स्वानुभूत है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

ख्वाजा साहब की महाना छठी पर देशभर से अकीदतमंद उमड़े

ख्वाजा गरीब नवाज की महाना छठी पर देश में अमन-चैन, शांति व भाईचारा की दुआ मांगी

- **ख्वाजा साहब की दरगाह में देशभर के जायरीनों की भीड़ उमड़ रही है**
- **मोहर्रम पर सद्दो का जुलूस व मेहंदी की रस्म आज निभाई जायेगी**

अजमेर, (कासं)। मोहर्रम यानी (मिनी उर्स) पर दरगाह परिसर में परंपरा के अनुरूप धार्मिक रस्में अदा की जा रही है। ख्वाजा साहब की दरगाह में देशभर के जायरीनों की भीड़ उमड़ रही है। शनिवार को ख्वाजा गरीब नवाज की महाना छठी शिद्दत और धार्मिक परंपरागत तरीके से मनाई गई। देश में अमन चैन, शांति व भाईचारा की दुआ मांगी गई। इस दौरान दरगाह परिसर अकीदतमंदों से खचाखच भरा रहा। मोहर्रम की सात तारीख रविवार को दरगाह परिसर में रखे ताजिए पर मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी, सद्दों का जुलूस निकलेगा।

सूफी संत ख्वाजा साहब की दरगाह परिसर स्थित आहता-ए-नूर में शनिवार सुबह 9 बजे महाना छठी मनाई गई। ख्वाजा साहब की महाना छठी की फातेहा का आयोजन हुआ। दरगाह कमेटी के मौलाना ने ख्वाजा साहब की जीवनी और उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी दी।

खुद्दाम-ए-ख्वाजा की ओर से गरीब नवाज की शान में नात व मनकबत पेश किए गए। साथ ही ख्वाजा साहब की जीवनी तथा शिक्षाओं पर बयान देकर मुल्क में अमन चौन, शांति, खुशहाली, भाईचारे एवं तरक्की के लिए दुआ की गई। दरगाह में मौजूद अकीदतमंदों व जायरीनों में तबर्रुक तकसीम किया गया। छठी शरीफ और

मोहर्रम और ख्वाजा साहब की महाना छठी पर दरगाह परिसर व बाहर अकीदतमंदों की भीड़ उमड़ी।

मोहर्रम के चलते दरगाह परिसर पूरी तरह जायरीन से खचाखच भरा हुआ था। इस अवसर पर दरगाह कमेटी द्वारा जायरीन के लिए लंगर का आयोजन किया गया।

मोहर्रम की सात तारीख रविवार को दरगाह स्थित लंगरखाने से सद्दो का जुलूस निकाला जाएगा। महफिलखाने पर चांदी का ताजिया आम जायरीन की जियारत के लिए रखा जाएगा तथा अस्र की नमाज के बाद मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी। इमाम बारगाह लंगर खाना से सात मोहर्रम को जुलूस प्रारंभ होगा। मोहल्ला सिपाहीयान में ताजिया रखा जाएगा। मर्सियाख्वानी और बयान शहादत का सिलसिला योमे आशूरा तक चलेगा। योमे आशूरा पर चांदी का ताजिया और डोला रूपी ताजिए की सवारी निकाली जाएगी। सवारी लंगर खाना इमाम बारगाह से प्रारंभ होकर दरगाह बाजार, अंदरकोट होते हुए बड़बाव पहुंचेगी, सलातो सलाम पढ़ने के बाद ताजिए को सैराब किया जाएगा।

बदरुद्दीन कुरैशी ने बताया कि हर साल की तरह इस साल भी मोहर्रम की 7 तारीख पर हजरत कासिम अलैहिस्सलाम की याद में पेश की जाने वाली मेहंदी की रस्म अदा की जाएगी।

उन्होंने बताया कि नागफनी दरगाह संपर्क सड़क से कुरैशी समाज के परिवार और ताराशाह नगर हुसैनी मोहल्ला विकास समिति की ओर मेहंदी पेश की जाती है। कुरैशी ने बताया कि अंदर कोट, त्रिपोलिया गेट, दरगाह बाजार, निजाम गेट होते हुए दरगाह शरीफ मकबरे पर बड़े ताजिया पर मेहंदी पेश कर रस्म अदा की जाएगी। रस्म में सर्वधर्म कौमी एकता समिति के पदाधिकारी भी सम्मिलित होंगे। मेहंदी से पूर्व दरगाह संपर्क सड़क पर सर्वधर्म प्रतिनिधियों द्वारा पौधरोपण किया जाएगा।

जे.एल.एन. मेडिकल कॉलेज को पार्थिव देह दान की

- **अजमेर के कोटड़ा निवासी प्रेमनाथ टंडन का शनिवार को निधन हो गया था**
- **टंडन की अंतिम इच्छा के अनुसार परिजनों ने उनकी पार्थिव देह जवाहरलाल नेहरु मडिकल कॉलेज को सौंपी**

अजमेर, (कासं)। अजमेर के कोटड़ा निवासी प्रेमनाथ टंडन का शनिवार को निधन होने के बाद उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार परिजनों ने उनकी पार्थिव देह को जेएलएन मेडिकल कॉलेज को दान किया। टंडन ने अपने जीवनकाल में देहदान का संकल्प लिया था।

टंडन के परिजन ने बताया कि प्रेमनाथ टंडन (67) का शनिवार को देहांत होने के बाद पार्थिव देह लेकर जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज पहुंचे, जहां मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों की मौजूदगी में देहदान किया गया। टंडन के परिजन ने कहा कि देहदान करने की प्रेमनाथ की अंतिम इच्छा थी, जिसे परिजन ने आज पूरा किया है। प्रेमनाथ टंडन के मित्र ने बताया कि क्रिश्चियन गंज टेलर का कार्य करते थे।

मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों ने देहदान को एक सराहनीय कदम बताया, जो मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मेडिकल छात्रों के लिए मानव शरीर की संरचना और कार्यप्रणाली को समझने के लिए वास्तविक शारीरिक संरचनाओं पर अध्ययन करना आवश्यक होता है। इस प्रकार की शैक्षिक सामग्री का आभाव होने पर छात्रों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। देहदान से न केवल छात्रों को बेहतर शिक्षा मिलती है, बल्कि भविष्य में बेहतर चिकित्सक बनने में भी सहायता मिलती है। कॉलेज प्रशासन ने टंडन के परिवार का आभार व्यक्त किया।

अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल डूंगरपुर पहुंचा, लोगों ने जवानों का हौसला बढ़ाया

- **शहरवासियों ने जगह-जगह पर पुष्प वर्षा कर सैनिकों का मनोबल बढ़ाया**
- **भारतीय सेना द्वारा आयोजित अरावली साइकिल यात्रा 1145 किमी की है**

डूंगरपुर, (निसं)। भारतीय सेना के अदम्य साहस एवं पराक्रम का प्रतिक बने कारगिल युद्ध विजय की रजत जयंती के उपलक्ष में भारतीय सेना द्वारा आयोजित अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल जब डूंगरपुर पहुंचा तो शहरवासियों ने जगह-जगह पर पुष्प वर्षा कर सैनिकों का मनोबल बढ़ाया। वहीं, जवानों का हौसला देखकर शहरवासियों में एक नये उत्साह का संचार हुआ। नसीराबाद से प्रारंभ साइकिल रैली जब डूंगरपुर के मोतली मोड़ पहुंची तो नगर सभापति अमृत कलासुआ, उपसभापति सुदर्शन जैन, कार्यवाहक आयुक्त कुलदीप सिंह, हरीश पाटीदार, डॉ. अरविन्द शर्मा, हरदील अजीज, इमरान आदि ने जवानों का माल्यापर्ण कर स्वागत किया और अभियान के बारे में जानकारी प्राप्त की।

सैनिक दल के साइकिल यात्रा के साथ मोतली मोड़ से डूंगरपुर पहुंचने पर ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रमुख संचालिका पद्मा दीदी एवं विजयलक्ष्मी दीदी के सानिध्य में सैकड़ों गणमान्य लोगों द्वारा पुष्प वर्षा के साथ भारत माता के जयकारों के साथ सेना के जवानों में एक नया उल्लास भर दिया। कर्नल डॉ. केसी शर्मा के नेतृत्व में शहर के पूर्व सैनिक किशोर जोशी, ललित मोहन, भोगीलाल परमार सहित बड़ी संख्या

अरावली साइकिल यात्रा अभियान दल का डूंगरपुर में शहरवासियों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

में उपस्थित पूर्व सैनिकों ने अपने सैन्य साथियों से भेंट कर अपने शहर एवं जिले की जानकारी दी। इस अवसर पर ब्रह्मकुमारी आश्रम परिसर में आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते हुये अग्निबाज दल का नेतृत्व कर रहे युवा अधिकारी ने कारगिल युद्ध में भारतीय सेना के साहसिक एवं विरता से परिपूर्ण प्रदर्शन की जानकारी दी एवं ऑपरेशन विजय के दौरान अपना सर्वोच्च बलिदान कर चुके अमर शहीदो को श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही जिले के अमर शहीद कालिया की पत्नी वीरनारी कालीबाई का उपरणा और बुके भेंट कर सम्मान किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में उपनिदेशक सूचना एवं प्रसार विभाग छाया चौबीसा, राजू भाई पंचाल, विनय चौबीसा, प्रवीण श्रीमाल, राजेश जैन, रमेश वरियानी, विनोद पंचाल, हरीप्रसाद शर्मा, भूपेश जोशी, सतीश अग्रवाल, चंदन राव, शारदा मालपाणी, शीतल भट्ट, शिला श्रीमाल, चन्द्रिका पटेल, रमा शाह, अंशुमाला पंचाल, सुभद्रा पण्डया, दक्षा कलाल, प्रतिमा शर्मा, हेमा चौबीसा, गुरमीत कौर सहित बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने माल्यापर्ण स्वागत किया। वहीं बहनों ने कलाई पर रक्षा सुत्र बांधे।

समारोह में शहर के दिल की आवाज ग्रुप द्वारा दी गई प्रस्तुतियों में गायिका नीता जोशी ने जैसे ही ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लों गीत प्रारंभ किया तो शहीदों की याद में उपस्थित लोगों की आंखें नम हो गई। वहीं गिरीश जोशी, बद्री सुथार ने जलवा तेरा जलवा...गीत गाकर देशभक्ति का समा बांधा जिस पर जवान और उपस्थित लोग थिरकने पर मजबूर हो उठे। कार्यक्रम के दौरान गुरूकुल विद्यालय की बालिकाओं ने शहीद केप्टन विक्रम बत्रा को समर्पित नृत्य नाटिका प्रस्तुत की, वहीं नवनीत पंड्या, कीमी सोमपुरा आदि ने जवानों के स्वागत में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किये।

गुजरात के लिये रवाना हुआ साइकिल अभियान दलः–9 जुलाई को नसीराबाद छावनी से रवाना हुआ अपने चौथे दिन अग्निबाज साइकिल दल जिले में पड़ाव के बाद अपनी 1145 किमी की यात्रा को आगे बढ़ाते हुए शनिवार प्रातः 6 बजे रवाना हुआ। इस अवसर पर कर्नल डॉ. के सी शर्मा, विजयलक्ष्मी दीदी, पदमा दीदी, हेमेन्द्र, अरविन्द शर्मा ने झंडी दिखाकर यात्रा को रवाना किया और साथ ही शुभकाममनाएं भी दी।

राशिफल रविवार 14 जुलाई, 2024

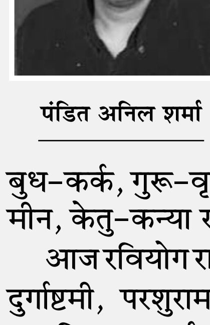

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 10:06 तक, शिव योग प्रातः 6:15 तक, बव करण सायं 5:26 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 8:43 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 10:06 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, परशुरामष्टमी, खरसी पूजा है। आज से अष्टानिक महापर्व आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:27 से 9:09 तक, लाभ-अमृत 9:09 से 12:32 तक, शुभ 2:14 से 3:56 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:46, सूर्यास्त 7:19

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा।

मिथुन
धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात होगी और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जा सकते हैं।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा।

धनु
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मकर
अपने आवश्यक और कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।